National Seminar

Sponsored by- ICSSR

Politics through Media - A Historical Outlook

Chief Patron	*Patron*	*Organising Secretary*
S. Nirmal Singh Dhillon Chairman, DSCW	Dr. Madhu Prahsar Principal, National & State Awardee	Dr. Pooja Prashar Head, P.G. Deptt. of History

Organized by

The Post Graduate Department of History

Dev Samaj College for Women, Ferozepur City

Scanned with CamScanner

INDEX

- The Buddhist Connects: India Exploring Opportunity in Central Asia and Media Attention — 7
  Archana Gupta
- King Ashoka in Visual Narratives-Changing Representations — 21
  Dr. Ashish Kumar
- Media, History and Post Truth — 29
  Diwakar Kumar Singh
- The History of the Press in India with Special Reference to the Punjab — 34
  Dr. Raj Kumar
- Media's Role in Peacekeeping Operation — 46
  Jyoti Murmu
- Education in Quebec and Role of Media — 55
  Jyoti Singh
- Media as the Fourth Estate of Democracy — 63
  Neetu
- Contribution of Indian Origin Makhan Singh as a Trade Union Leader in Kenya — 67
  Pravasini Barik and Archana Gupta
- Contemporary Migration and Media : The Case of Indian Students in Dushanbe — 76
  Neha Tewari
- The Contribution of Shaheed Bhagat Singh in Colonial Media — 85
  Ramanpreet Kaur
- The Status of Women in Tajik Society: Media's Role — 92
  Shriya Sinha
- साहित्य और मीडिया — 113
  डॉ. पूनम सूद
- औपनिवेशिक भारत में स्वतंत्र मीडिया के विकास के चरण, प्रतिबंध और परिणति — 119
  डॉ. अमित कुमार सिंह

Scanned with CamScanner

साहित्य और मीडिया
(संदर्भ भारतीय साहित्य)

डॉ पूनम गुप्त*

मैं अपने पर्चे में मीडिया का इस्तेमाल 'मास मीडिया' के अर्थ में कर
ी हूँ। मीडिया विमर्शकार मार्शल मैकलुहान के अनुसार 'Man is the
tension Medium' यानि मनुष्य माध्यम का विस्तार है। इस आधार
कह सकते हैं कि समकालीन मनुष्य मीडिया की निर्मिति है। यह
कालीन मनुष्य ही समकालीन साहित्य के केंद्र में है। समकालीन पाठक
मीडिया के आपसी संबंध को समझने के लिए यूनेस्को ने मैकब्राइट की
क्षता में एक समिति का निर्माण किया। समिति अपने अध्ययन के
ात इस नतीजे पर पहुँची कि मीडिया के व्यापक प्रसार के बाद 'समझ
संवेदना की पठन संस्कृति के बजाए सूचना की पठन संस्कृति एक
पूर्ण स्थानांतरण है। इसके फलस्वरूप 'संवेदना को विकसित करने
साहित्य की जगह उपयोगिता प्रधान सामग्री को पढ़ने की प्रकृति
सेत हो रही है। आयोग का निष्कर्ष स्पष्ट तौर पर यह दर्शाता है कि
य की अंतर्वस्तु और उसके पाठक की मानसिक बुनावट में मीडिया ने
र्ण हस्तक्षेप किया है। आयोग का निष्कर्ष भी मैकलुहान की स्थापना
ल प्रदान करता है। इस पर्चे में मैं इसी बदले संदर्भ में साहित्य और
ा के रिश्ते पर बात करूँगी। इस संदर्भ में एक और बात गौरतलब है
हित्य मूलतः एक कला रूप है, सर्जनात्मक सांस्कृतिक कर्म है, वहीं
और उसकी तकनीकि ने मनुष्य के सांस्कृतिक बर्ताव को निर्णायक
बदला है। मीडिया के द्वारा प्रसारित हो रहे संदेश का ग्रहीता अपने
भाषिक, जातीय और नस्ली संदर्भ में उसे ग्रहण करता है, अपने
के अनुरूप उसमें अर्थ भरता है। इस प्रकार 'पाठक' व्यापक सांस्कृ
नर्श का अंग बनकर नई अस्मिताओं का सृजन करता है। फिर इन
ओं में भी मीडिया के प्रसारण पर अधिकार को लेकर आपसी
होती है। यहाँ आकर पाठकीय अस्मिताएँ प्रतिनिधित्व की लड़ाई
गती है। आशय यह कि मीडिया जगत में सांस्कृतिक प्रतिनिधित्व
बलीकरण का एक रूप बन जाता है। यहाँ मीडिया साहित्य की

*श्वरी कालेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, नई दिल्ली

Scanned with CamScanner